॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

श्रीसूक्त

विषय-सूची

श्रीसूक्त 3

श्रीसूक्त

देवी भगवती के अर्चनमें 'श्रीसूक्त' की अत्यधिक मान्यता है। विशेषकर भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिये 'श्रीसूक्त' के पाठ का विशेष महत्त्व है। ऐश्वर्य एवं समृद्धि की कामना रखने वाले साधक द्वारा इस सूक्त के मन्त्रों का जाप, हवन, पूजन मनोवांछित फल प्रदान करने वाला होता है। इस सूक्त के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत, जातवेद ऋषि, 'श्री' देवता और अनुष्टुप्, प्रस्तारपंक्ति एवं त्रिष्टुप् छन्द है।

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१॥

हे जातवेदा अग्निदेव ! आप सुवर्ण के समान रंगवाली, कुछ कुछ हरितवर्ण विशिष्टा, सोने और चाँदी के हार धारण करने वाली, चन्द्रवत् प्रसन्नकान्ति, स्वर्णमयी लक्ष्मी देवी का मेरे लिये आवाहन करें ॥१॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

हे अग्ने ! उन लक्ष्मी देवी का मेरे लिये आवाहन करें, जिनका कभी विनाश नहीं होता तथा जिनके आगमन से मैं सोना, गौ, घोड़े तथा पुत्रादि को प्राप्त करूँगा। ॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥

जिन देवी के आगे घोड़े तथा उनके पीछे रथ रहते हैं तथा जो हस्तिनाद को सुनकर प्रमुदित होती हैं, उन्हीं श्रीदेवी का मैं आवाहन करता हूँ, वह लक्ष्मीदेवी मुझे प्राप्त हों ॥३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामाज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मस्थितां पद्मवर्णा तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

जो साक्षात् ब्रह्मरूपा, मन्द मुस्कानवाली, सोने के आवरण से ढकी हुईं, दयामय, तेजोमयी, पूर्णकामा, भक्त अनुग्रह कारिणी, कमल के आसन पर विराजमान तथा पद्मवर्णा हैं, उन लक्ष्मी देवी का मैं आवाहन करता हूँ ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीम शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीमे नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

मैं चन्द्रके समान शुभ्र कान्तिवाली, सुन्दर द्युतगामिनी, यश से दीप्तिमती, स्वर्गलोक में देवगणों के द्वारा पूजिता, उदारशीला, पद्महस्ता लक्ष्मीदेवी की शरण लेता हूँ। मेरा दुःख दारिद्रय दूर हो जाय। मैं आपको शरण्य के रूप में वरण करता हूँ ॥५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥

हे सूर्य के समान प्रकाशस्वरूपे ! आपके ही तपसे वृक्षों में श्रेष्ठ मंगलमय बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ। उसके फल आपके अनुग्रह से हमारे बाहरी और भीतरी दुःख दारिद्रय को दूर करें ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥

हे देवि! देवसखा कुबेर और उनके मित्र मणिभद्र तथा दक्ष प्रजापति की कन्या कीर्ति मुझे प्राप्त हों अर्थात् मुझे धन और यशकी प्राप्ति हो। मैं इस राष्ट्र में-देश में उत्पन्न हुआ हूँ, मुझे कीर्ति और ऋद्धि प्रदान करें ॥७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णद में गृहात् ॥८॥

लक्ष्मीजी की ज्येष्ठ बहन अलक्ष्मी का, जो क्षुधा और पिपासा से मलिन–क्षीणकाय रहती हैं, मैं विनाश चाहता हूँ। देवि ! मेरे घर से सब प्रकार के दुख दारिद्रय तथा अमंगलको दूर करो ॥८॥

गन्धद्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥९॥

जिनका प्रवेशद्वार सुगन्धित है, जो दुराधर्षा तथा नित्यपुष्टा हैं और जो गोमय के बीच निवास करती हैं, सब भूतों की स्वामिनी उन लक्ष्मी देवी का मैं अपने घर में आवाहन करता हूँ ॥९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

मन की कामनाओं और संकल्प की सिद्धि एवं वाणी की सत्यता मुझे प्राप्त हो। गौ आदि पशुओं एवं विभिन्न अन्नों-भोग्य पदार्थो के रूप में तथा यश के रूप में श्रीदेवी हमारे यहाँ पधारें पधारें ॥१०॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

लक्ष्मीजी के पुत्र कर्दम की हम सन्तान हैं। हे कर्दमऋषि ! आप हमारे यहाँ उत्पन्न हों तथा कमल की माला धारण करनेवाली माता लक्ष्मीदेवी को हमारे कुल में स्थापित करें ॥११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

जल स्निग्ध पदार्थो के सृष्टि कर्ता, हे लक्ष्मीपुत्र चिक्लीत ! आप भी मेरे घर में वास करें और माता लक्ष्मी देवी का मेरे कुलमें निवास करायें ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥

हे अग्ने! आर्द्रस्वभावा, कमलहस्ता, पुष्टिरूपा, पीतवर्णा, कमल माला धारण करने वाली, चन्द्रमाके समान शुभ्र कान्ति से युक्त, स्वर्णमयी लक्ष्मीदेवी का मैं आह्वाहन करता हूँ ॥१३॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णा हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१४॥

हे अग्ने! जो दुष्टों का निग्रह करने वाली होने पर भी कोमल स्वभाव की हैं, जो मंगलदायिनी, अवलम्बन प्रदान करनेवाली यष्टि रूपा, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण मालाधारिणी, सूर्यस्वरूपा तथा स्वर्णमयी हैं, उन लक्ष्मीदेवी का मैं आह्वाहन करता हूँ। ॥१४॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वाविन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

हे अग्ने! कभी नष्ट न होनेवाली उन लक्ष्मी देवी का मेरे लिये आवाहन करें, जिनके आगमन से बहुत-सा धन, गौएँ, दासियाँ, अश्व और पुत्रादि हमें प्राप्त हों ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

जिसे लक्ष्मी की कामना हो, वह प्रतिदिन पवित्र और संयमशील होकर अग्निमें घी की आहुतियाँ दे तथा इन पन्द्रह ऋचाओंवाले श्रीसूक्त का निरन्तर पाठ करे ॥१६॥

पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व ॥१७॥

कमल-सदृश मुखवाली ! कमल-दलपर अपने चरणकमल रखनेवाली ! कमल में प्रीति रखनेवाली ! कमल-दल के समान विशाल नेत्रोंवाली ! समग्र संसार के लिये प्रिय ! भगवान् विष्णुके मनके अनुकूल आचरण करनेवाली ! आप अपने चरणकमल को मेरे हृदयमें स्थापित करें ॥१७॥

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१८॥

कमल के समान मुखमण्डलवाली! कमलके समान ऊरु प्रदेशवाली ! कमल-सदृश नेत्रोंवाली ! कमल से आविर्भूत होनेवाली ! पद्माक्षि ! आप उसी प्रकार मेरा पालन करें, जिससे मुझे सुख प्राप्त हो ॥१८॥

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥१९॥

अश्वदायिनी, गोदायिनी, धनदायिनी, महाधन स्वरूपिणी हे देवि! मेरे पास सदा धन रहे, आप मुझे सभी अभिलषित वस्तुएँ प्रदान करें ॥१९॥

पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥२०॥

आप प्राणियों की माता हैं। मेरे पुत्र, पौत्र, धन, धान्य, हाथी, घोड़े, खच्चर तथा रथ को दीर्घ आयु से सम्पन्न करें ॥२०॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो. बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥२१॥

अग्नि, वायु, सूर्य, वसुगण, इन्द्र, बृहस्पति, वरुण तथा अश्विनीकुमार ये सब वैभव स्वरूप हैं ॥२१॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२२॥

हे गरुड! आप सोमपान करें। वृत्रासुर के विनाशक इन्द्र सोमपान करें। वे गरुड तथा इन्द्र धनवान् सोमपान करनेकी इच्छावाले के सोम को मुझ सोमपान की अभिलाषावाले को प्रदान करें ॥२२॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ॥२३॥

भक्तिपूर्वक श्रीसूक्त का जप करनेवाले, पुण्यशाली लोगों को न क्रोध होता है, न ईर्ष्या होती है, न लोभ ग्रसित कर सकता है और न उनकी बुद्धि दूषित ही होती है ॥२३॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्र सीद मह्यम्
॥२४॥

कमलवासिनी, हाथ में कमल धारण करनेवाली, अत्यन्त धवल वस्त्र; गन्धानुलेप तथा पुष्पहार से सुशोभित होनेवाली, भगवान् विष्णु की प्रिया, लावण्यमयी तथा त्रिलोकी को ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली हे भगवति देवी! मुझ पर प्रसन्न होइये ॥२४॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधव माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥२५॥

भगवान् विष्णु की भार्या, क्षमास्वरूपिणी, माधवी, माधवप्रिया, प्रियसखी, अच्युत वल्लभा, भूदेवी भगवती लक्ष्मी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥२५॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात् ॥२६॥

हम विष्णुपत्नी महालक्ष्मी को जानते हैं तथा उनका ध्यान करते हैं। वे लक्ष्मीजी सन्मार्ग पर चलने हेतु हमें प्रेरणा प्रदान करें ॥२६॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥ २७॥

पूर्व कल्प में जो आनन्द, कर्दम, श्रीद और चिक्लीत नामक विख्यात चार ऋषि हुए थे। उसी नाम से दूसरे कल्प में भी वे ही सब लक्ष्मी के पुत्र हुए। बाद में उन्हीं पुत्रों से महालक्ष्मी अतिप्रकाशमान् शरीरवाली हुईं, उन्हीं महालक्ष्मी से देवता भी अनुगृहीत हुए। ॥२७॥

ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२८॥

ऋण, रोग, दरिद्रता, पाप, क्षुधा, अपमृत्यु, भय, शोक तथा मानसिक ताप आदि-ये सभी मेरी बाधाएँ सदाके लिये नष्ट हो जायें ॥२८॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशु बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥२९॥

भगवती महालक्ष्मी ! ओज, आयुष्य, आरोग्य, धन धान्य, पशु, अनेक पुत्रों की प्राप्ति तथा सौ वर्ष के दीर्घ जीवन का विधान करें और मानव इनसे मुण्डित होकर प्रतिष्ठा प्राप्त करे ॥२९॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।